॥ ल:पं: ॥ भयेंआये॥ फागुणवदिछठिसोसनमिषांजनम
॥ २ ॥ सुमंगलगाये॥ ताहीदिनसबपरिग्रहतजिकरदि
क्ष्यालीकीनाई॥ मांघसुकलदोइजे पुणीनकौकेव
लनिधिउपजाई॥ भादवसुदिपंचमीकेदिनाकर्मअ
घातिपाटोर॥ नंतचतुष्टयसहितप्रभुजी मोक्षमह
लपगुधारे॥ दोहा॥ महिषचिन्हवरननलसैसम
रधनुषसोदेह॥ वर्षबहत्तरलाषवयपुनैसो फुल
लेप॥ ॐ ह्रीं॥ वांसपूज्यजिनपंचकल्यांणिकभ्यो
अर्घ॥ १२॥ कमकर्मानिपलालतसुजैसेनोहेमा
य॥ पुरीपकंपलामेंभयेकुलइक्ष्वाकसोभाय॥ ॐ
ह्रीं विमलजिन॥ सहस्रारदिवलोकतैं जेठवदिनवमी
केदिना॥ गर्भवासजिनलियौ भयेआनंदजगतजन
ना॥ माघसुकलछठिजनमभयेश्रीजिनलीना
सेनमाइकी चौथैतानपकरकर्मनठेना॥ मांघ
सुकलछठिज्ञांनभयौ निर्मलसबभासा॥ सुदअ

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वपुसायलिया ॥ दोहा ॥ चरणसिंह श्रीअर्हत को नैवेध
गुषलननगासु ॥ आयुपूर्व इकलाषकी पुनवौं ममकी ॥
आंस ॥ ॐ ह्रीं ॥ श्रीसीतलजिन पंचकल्यानिकेभ्यो अर्घं
१० पिता सो निर्मलनांथ जिहि विमला मात विचार ॥ वं
श कै हौ इल्वाकपुण सिंघपुरी अवतार ॥ चौपाई ॥
पुष्पोत्तरन निगर्भ सो आऐ जेठ वदी छठ मंगल गाऐ
फागुणसुदि ग्यारस सुषकारी जन्ममहोत्सव इंद्र क
राई ताहि दिन पुणदिक्षा धारी माघअमावस ज्ञान
उजारी सावनसुदि पांचै मनभाई हन अघाति पाति
व शिवपाई ॥ दोहा ॥ तेइ अंक जिनवर नमैं असियधनु
कनन धार चवरासी लष पूर्व की आयु परमसुष
कार ॥ ॐ ह्रीं ॥ श्रीआंशजिन पंचकल्यानिकेभ्यो ॥
अर्घं ॥ ११ नृपवसुदेव पिता सुपुण विजयादेवी
माय ॥ कुल इल्वाक नो निर्मलो चंपापुर उपनाय
चौबोला ॥ शुक्रसुर्गतनजिवर अषाढ की छठ सुग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

॥पं०पू०॥ नमदिनकंचनकीकटोरीनीरभरिजामैंलिया
॥२॥ गुणगायसमानबनायनाचतधारदेहर्षितहिया
कल्यांनजिनकेपांचउतमसकलसुषदातारजी
जेकरैहैंमनवचकायप्रनालहयसुषअपारजी
ॐ ह्रीं ॥ पंचकल्यानिकभ्यो ॥ जलं ॥ १ ॥ घिसस
चंदनअगरआदिकपरमसीतलताकरै ॥ जिन
राजचरनचढ़ाइसैभवतुरतनापविथाहरै ॥ क
ल्यान: ॥ ॐ ह्रीं ॥ पंचकल्यानिकभ्यो ॥ चंदनं ॥ २
चावलअखीधसेतससिसमधोयजलसोंलीजि
ये ॥ हियपरमहर्षितभावसोंभवपुंजजिनढिग
दीजिये ॥ कल्यांन: ॥ ॐ ह्रीं ॥ पंचकल्यांनिकभ्यो
अछत ॥ ३ ॥ सुमनसुन्दरल्यायसुन्दरलौंगआ
दिकसारकहीं ॥ जिनराजचरनचढ़ायमनवचस
मरवांनवियाटई ॥ कल्यांन: ॥ ॐ ह्रीं ॥ पंचकल्या
निकभ्यो ॥ पुष्पं ॥ ४ पकवांननीकैंतुरतघीकौ

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीमान ॥ गुणजननमधरनवपदतांणलोष ॥ दश
अनसपजननमनहीसोपाए ॥ नपकर गुणकेष
लनिधलहाप ॥ नवद्दशाअनसपउपजेसोऔर ॥
पउदाहेवनकनकेहेनोर ॥५॥ दोहा ॥ मानहां
वमुनांनिरेचारचतुष्टपजोप ॥ इनस्यालिसगु
णधारकरलनअरहंनपदहोप ॥ सोरठा ॥ क
र्मसकलनिनत्याग ॥ भेसिद्धपरमात्मा ॥ मैं
निनकेपगुलाग ॥ पहगुननहे भावसो ॥ दोहा ॥
ऐसेपंचकल्यांणजोपूजेभानिसुषपाए ॥ उन
इअपवर्गनैंनिहूलिष्टइनभाए ॥ ॐ ह्रीं ॥
चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्यानिकेभ्यो ॥
आत्रावतरावतरसंवौषट्आह्वाननं ॥१॥ आत्रा
तिष्ठतिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥२॥ आत्राममसन्नि
हितुभवभववौषट्सन्निधापनं ॥३॥ परपुष्पां
जलक्षेपन ॥ अष्टक ॥ गीतकाछंद ॥ म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ल:१:॥
॥३॥

श्रीजिनकेकल्याणपंचपूजैंजोकोई॥सोनिजहि
तकेहेमनांहिजिनवरहितहोई॥जिमकिसांण
कसकरैनांहिनरपतिकेकाण॥अपरोगसोनि
जपरिवारपालनैकारनमारण॥पूर्णअर्घ॥१०
अथप्रत्येकपूजा॥दोहा॥पितानाभिरपनं
दिनमरुदेवीजनमुमाय॥कुलइक्ष्वाकविषैभयेप्र
थमआदिजिनराय॥अडिल्ल॥वदिअषाढकी
दोइजसुरपुरआईयो॥नाभिसरवारथसिधुगर्भमें
आईयो॥चैत्रवदिअनवमीउतराषाढहै॥नारि
ननमभयोपुरुजनपुनयकारहै॥पुरणनवमी
वदिचैत्रनपदवआदरी॥फागुणसुदिपूर्णैकौं
केवलनिधवरी॥माघवदीचउदसआदअनिआनं
दभयो॥अष्टापदतेंजायमोक्षथानिकलयो॥
दोहा॥श्रीजिनचौरासीपूर्वलषपंचसनकधनका
य॥तेजिनवरपूजौसदाअषभिविकलषभाय॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हर्षिकरधरल्याईसे॥ सजिकैंसोसुन्दरथारमैंजि
नराजचरननचढाईसे॥ कल्यान:॥ ॐह्रीं॥ पंचक
ल्यानिकभ्यो॥ नैवेद्यं॥ ५ मनोग्यघनवांनीस
थाकर्पूरआदिककीकही॥ करआरतीजिनराज
केहितसुपरमेदलहोंसही॥ कल्यांन:॥ ॐह्रीं॥ पंच
कल्यानिकभ्यो॥ दीपं॥ ६ धरवस्तकचंदनआदसुगं
धआतलनाजामेवसैं॥ खेवतसोपावककमांहिनाको
कर्मवनतुरतहीनेसैं॥ कल्यांन:॥ ॐह्रीं॥ पचकल्या
निकभ्यो॥ धूपं॥ ७ फलसारसभारीवरसुपारी
श्रीफलादिकआनिये॥ मोक्षफलकेकारणेजिन
राजपूजाठांनिये॥ कल्यांन:॥ ॐह्रीं॥ पचकल्यानि
कभ्यो॥ फलं॥ ८ जलगंधअक्षितपुष्पनेवजदीप
धूपमेलीजिसे॥ फलसहितकरलसुभावकोजि
नराजचरननहोनिसे॥ कल्यांन:॥ ॐह्रीं॥ पंच
कल्यानिकभ्यो॥ अर्घं॥ ९॥ इम मंगलाष्टक॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सं:पं: सुदिपूनमभाईनपजापलियौंवनजाई॥ कालिक
४ कीचौथअंधेरी॥ नवलईमोक्षठकुराई॥ दोहा॥ सा
ठलाषपूरवतनी आयुविकहपजांण॥ चांपचारसैंतु
गतनपूजतहूंतेमोहांरा॥ ॐ ह्रीं॥ संभवजिणपंच
कल्याणकभ्यो॥ अर्घं॥ ३॥ संवरपितासिद्धार्थपुन
मातकहीसुषदाय॥ अवधपुरीरत्नाककुलउपज
त्रभुवनराय॥ छंद चौपाई॥ किजयविमांन
छोड्सुषकारणगर्भविषैप्रभुआये॥ छठिवैसाष
श्यांमअतिसुन्दरघरघरमंगलगाये॥ माहसुदीबा
रसमोपुनर्वसनक्षत्रमेसोतातैंजनलीन्हा॥ ताहीवाल
रकोतपधारकरकेकर्मनवछीन्हा॥ पौषसुदीचउ
दसोकेदिनकोकेवलज्ञांनउपाया॥ छठिवैसाषधौरी
अतिसुन्दरशिवपुरवासकराया॥ आयुलाष
पूरवपंचासकोमरकरविंकवरणमैं॥ धनुषतीन
सैअरुपंचासगणपूजाउपहरणमैं॥ ॐ ह्रीं॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं ॥ श्रीऋषभदेवपंचकल्याणकेभ्यो ॥ अर्घं ॥ १
वंसकहै इक्ष्वाकनमु पिताशत्रुजितनाम ॥ विजया
देवीमाइ पुरनगर अजोध्याठाम ॥ सोनीता १७८ ॥
नाभिकैसो विमानविजयसोमहा ॥ सेतजेठअमावस
गर्भलहा ॥ सुदिमाहदसैंवरजनमदिना ॥ नवैहीन
नौमिनक्षत्ररोहिणी ॥ गजचिन्हसोवरणमहादिपा
सुदिमाहनवैंतपधारलिया ॥ वदिपोषग्यारस
ज्ञानभयौ ॥ तिहूवासरकौंशिवथानलयो ॥ दोहा
आयुबहत्तरपूर्वलषहेमवरणसुषदाय ॥ धनुष
सेसाढैचारसैपूजौंमनक्रमसाय ॥ ॐ ह्रीं ॥ अजित
पंचकल्याणिकेभ्यो ॥ अर्घं ॥ २ पिताजितारथभ
थधपुरमायसोसेनाजाण ॥ वंशपरमइक्ष्वाकमैंउ
पजैसुषकीषाण ॥ छंदत्रभंगी ॥ फागुणसुदि
अष्टमआये ॥ ग्रीवैकसोगर्भबसाये ॥ कातिकसु
दिपूरणमासीषा ॥ जनमैजगनाइकश्रेष्टा ॥ मारग

©Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

॥ल॰पं॰
॥५॥

२श्रीजिनमसतनभिषेमैंलीना॥ कातिकवदिपंचमीज्ञा
नवनमैंनपकीना॥ दोहा॥ चैत्रसुकलपूण
मभलीज्ञानलियैंनिरधार॥ फागुनसुदिसातैदि
ना आयवरी शिवनार॥ तीसलाषपूरवतनीआ
युसुनिगणकीजाण॥ धनुषभढाईसैंउचितक
मलचिन्हपभुजाण॥ ३६॥ पद्मप्रभुजिणपंचक
ल्याणिकभ्या॥ अथ॥ ६॥ तानकेहेसासुपितिष्टन
पमानप्रथ्वीसार॥ वंशकहौंइक्ष्वाकवर बानारस
पुरधार॥ ७८॥ अभंगो॥ ग्रैवेइकतैंआयेमद्ध
लमाहेभादौसुदि७८मर्गलिया सुदिजेष्टमहीं
नाबारसलीज्ञाजनमकल्याणिकरंद्रकिया ब
दिजेष्टसोबारसत्यागरमारमआनमनिमसवा
बलिया॥ फागुण७८कारीज्ञानभजारीसातैभ
हेशिवरमणपिया॥ दोहा॥ लक्षणतिनकैंहैं स्वां
थियैउचितधनुषसैं दोय॥ बीसलाषपूरबथि

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीअभिनंदनजिनपंचकल्यानिकभ्यो॥ अर्घं॥ ४
रपतिमेघरथतांतनसुमाघमंगलाजांण॥ वंश
कहौंइक्ष्वाकपुरणनगरअजोध्याथांण॥ लछमी
धराछंद॥ विजयंतविमानथकीउसुषकारनहोइम
तेंनसोगर्भलिया॥ माघचैतसुदिद्वादसनमैंदेवन
जयजयकारकिया॥ सुदिवैसाषदसैंअभिउनमति
णकानपरिनिगाया॥ पकारदसुदिचैचज्ञांनध
रनादिनशिवपुरपाया॥ दोहा॥ आयुपूर्वचाली
सकीचवकहचिन्हकपिगुजांण॥ धनसतीनसैंउच्चतन
नपूजौंश्रीभगवांण॥ ॐ ह्रीं सुमतिजिनपंचक
ल्यानिकभ्यो॥ अर्घं॥ ५धारनंदसुनपितामा
नसुसीमाजांण॥ वंसकहौंइक्ष्वाकपुरणकौसं
वीपुरथांण॥ छंदमोतीदाम॥ नमिग्रैवेइककौं
छोडमाऊसुदिछटकोआये गर्भवासजिणालि
यौंजगनजरामंगलगाये॥ कातिकवदित्रयो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिना ॥ सुषकारनमूलनक्षत्रगिना ॥ तिहिंवासरकै
तपधारलिया ॥ सुदिदोइजकातिकलोंणभया ॥ सु
रभावकीनवमीविमला ॥ अमराअनरापरराज
लिया ॥ दोहा ॥ लक्षणमगरसोचरनमैंसुंगधनफ
सतनोंरा ॥ आसुलावदेंपुर्वकीप्रनौंश्रीभगवांण ॥
उहिं ॥ पुष्पदंतजिनपंचकल्यानिकयो ॥ अर्घ
९ ॥ दिढरथनांनसोमायसुण ॥ सुभसुलछणजांन
रलाकोफुलनगरसुणमहूलसुरपहिचान ॥ नरें
[illegible] ॥ नभिआरनस्वर्गसोआए
आठैमधुकारी ॥ लहिगर्भवासमुषदायजनपजनप
वलिहारी ॥ बारसवदिपोषपवित्रतादिनजनमलि
या ॥ सुणपूर्वाषाउनक्षत्रहरसुरन्होनकिया ॥ चरि
माकुसुवासठीकतपधारवनजाई ॥ सुदिपोषछै
जिनराजकेवलनिधपाई ॥ असुनकीमावसपा
यजोगनिरोधकिया ॥ नवपरमनिरंजनपायशि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मीरेवसुपारसहोय॥ ॐह्रीं॥ श्रीसुपार्श्वनाथजिन
पंचकल्यानिकभ्यो अर्घं॥७ पिलाकेहमहासेनन
पप्रभसुलक्षणामाय॥ चंद्रनाथसिरि॥ चाकहैचंद्रपुरी
उपजाय॥ कुंडली ७८॥ चैतपंजिनजोमोविमा
नन॥ गर्भमधाजिनपंचमजांनन॥ पोषवदिबारस
जनमनलिया॥ नासुदिनपरिग्रहनजिनकिया॥
गदसोसानैफागुनपाईसो॥ ज्ञानकेवलजिनवर
आईयौं॥ करअघालिपलादिनछीनन॥ जिनसुप्र
मैंवासाकीजय॥ दोहा॥ आपुलानयज्ञापूर्वकौध
नुकैदसैदह॥ नवमहिषकौविंकपगपूजनउभ
नेहै॥ ॐह्रीं॥ चंद्रप्रभुजिनपंचकल्यानिकभ्यो
अर्घं॥ ८ जनककनासुसुग्रीवरूपमायरमादेजा
सु॥ वंसकहीइक्ष्वाकवरकहकंधापुरवासु॥ सोर
ठा ७९॥ नजिकैप्रभुप्राणनस्वर्गवेपव
दिफागुनैमैंजिनगर्भलेय॥ सुरमारगएकमजनम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पंचकल्यानकंभ्यो॥ अर्घ ॥१४॥ रतनपुरी नृप
भानु पिता माय सुव्रता जांण॥ कुल इक्ष्वाक सौ नीम
में उपजे भानु समांण॥ चौपाई॥ श्री सरवार्थ
सिद्ध तजि कै आये॥ जिननजनी के कुष बसाये॥ सु
दि वैशाष त्रयोदशि जांणौ॥ माघ सुकल तेरस पण
मांणौ॥ पुष्प सो जनम भगत पन लीना॥ इंद्रादिक
सु उछव कीना॥ माह सुदि तेरस सुषकारी॥ निजहि
तु दुद्धर तप प्रभु धारी॥ पौष अमावस केवल पायौं॥
भवि जीवन कौं पार लगायौं॥ जेठ चौथ सुदि कादिन
षासा॥ किंयो नाश शिवपुर मैं वासा॥ दोहा॥ आ
युलाष दशआव रस की धनस सो पैंतालीस॥ वज्र
चिन्ह लषया नैं सुर नर आवत सीश॥ हस्तनाग
पुर मैं विस्वसेंन नृप नंद॥ अमरा देवी उर धरे कुरुवं
सिन के चंद॥ ॐ ह्रीं॥ श्री धर्म्मनाथ जिन पंचक
ल्यानिकंभ्यो॥ अर्घ॥ १५॥ राग भाषरी मैं॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थाउ अष्टमी किपां सिवपुर मैं वास ॥ दोहा ॥ धनुष
साठ आयुष वरष माठलाष गुण धाम ॥ लषन राह
को चिंह पग पुष्प गुण करों प्रणाम ॥ ॐ ह्रीं ॥ विम
ल जिन पंचकल्यानिकभ्यो ॥ अर्घ ॥ १३ ॥ दोहा ॥
सिंघसैन नंदन भये सुभाद्देवी माय ॥ नगर विनी
ता जनम लहि कुल इश्वाक सोभाय ॥ कानिकेकी
चाल ॥ मांणी पुष्पोत्तरसो विमांन तजूं कानिकधर
ह कम मांणाहो ॥ मांणी जनम समय हरहर्ष कर अभ
कि पें महासवमा रहो ॥ मांणी जो बवही नारसारि
नाजिनलीक्षौं अपनिरधार हो ॥ मांणी चेत्र अमाव
स पाइ केवल सांणा उहो नहो ॥ मांणी लाहीवि
नसव कर्म हरि भये सिद्ध निरंजन जो नहो ॥ मांणी श्र
ओम नगचकाइकें ॥ दोहा ॥ तीसलाष गुण
वरष की आयु धनक पंचास ॥ सेंधाल उरणाथा
ण मैं पूजत होत सलास ॥ ॐ ह्रीं ॥ श्री अनंतनाथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

॥ न॰ पु॰ ॥ १० ॥

गरीजनमहारंसीभगवांन॥ सोरिठे॥ मुनिसु
व्रतमहाराजहोमेरीपीरहौं॥ मुनि ॥ श्रावणस्वर्गानि
ओमाउनवदिदोइजगर्भसोआए॥ दशमीसुदिवैशा
षमासकीजनमसुमंगलगाए॥ मुनि४॥ पुणवैसाषि
साषमासकीदसंतपधरेजुचीका॥ मुनिसुव्र६
फागुणवदिबारसमाहाकाशिवथलजाइविराजे
साअवेदवसेवककोंभवदुखवेगहीदूरकरीजे मुनि
दोहा॥ नौससहसवरसतणिथितिबीसधनुषतनजा
न॥ कछुअंकलषचरणमेंपूजोंश्रीभगवांन॥ ॐह्रीं
मुनिसुव्रतजिनपंचकल्याणिकभ्यो॥ अर्घ॥ ५०
सिन्नाथधर्मसविजनकहेवीनदेवीमाय॥ मथुरानग
रीजनमलहिसुनरसांकसुभाय॥ जिनपदेल
गीताल अपराजितसौंजिविमानचलआरीयो
अश्वनवदिबीजोगेराइजगर्भअवतारलहीयो॥ अषाढसोमे

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंकपरवांण॥ ॐ ह्रीं॥ अरहजिनपंचकल्यानिकभ्यो
अर्घं॥ १८॥ मथुरानगरी जन्मलह कुल इक्ष्वाक सो
जांण॥ कुंभराय के नंदन प्रभु मात प्रभावती मांण॥
ढाल॥ मल्लिजिनेसुर पूजौ पूजौ पूजौं हे भवतार॥ अपरा
जित तजि आये आये गर्भ मझार॥ चैत्र सुदी एक म कौं
गावे मंगलचार॥ मल्ल॥ मारग सुदि ग्यारस कौं लयौं
जन्म अवतार॥ अभ्रव न नवत साजां णो भव जैनै का
र॥ मल्ल॥ ४॥ मारग सुदि ग्यारस पुरण पद धर हरि सर्वक
र्म पौष वदी दोइ जकौं केवल लहि मर्म॥ मल्लजिने:
फागुन पंचमी कारी लजि कैं समोसरण॥ भये निरंजन
शिव मैं भव संकट हरण॥ मल्लजिनेसुर पूजौ पूजौं
दोहा॥ आयु सहस पचपन नी धनुष मो वौल सरी
र॥ कुंभ चिंह राजन चरण हौं ह मारो पीर॥ ॐ ह्रीं म
ल्लजिनपंचकल्यांनिकभ्यो॥ अर्घं॥ १९॥ दोहा॥ वा
मांदेवी मात सुत पिता सुमत्र नृप जांण राजग्रेह न

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ ने: १: ॥ ॥ दोहा ॥ सहसबरषथितिधनुषदसश्यामलछनसंषसुपेन
॥ ११ ॥ राजमतीकेरमनकूंवैरोप्रनमसमेन ॥ ॐ ह्रीं ॥ श्रीनेमना
थजिनपंचकल्याणिकेभ्यो ॥ अर्घ ॥ २२ ॥ विश्वसेण
कुलचंद्रमावांमाउरअवतार ॥ कुलरहांकविषेभए
बानारसपुरधार ॥ [illegible] ॥ प्रांणतदिव
हेठांमगर्भमैंबेसनहोमैं ॥ होइअवतारिबैसाषकीसची
सेवजिनमामैं ॥ पोषवदीएकादशीजनमजिनजीनै
लीना ॥ ताहीदिनसवत्यागतपम्यावननैमंकीना ॥ चैतव
दिचौथभयोथलबेचमुनरथितनभाई ॥ [illegible]अघातियानाम
प्रभूकेवलनिधिपाई ॥ सांवनसुदिसप्तमीअघाति
याकर्मसोनासा ॥ वसुगुणसहितअणांनकिये
शिवपुरमेवासा ॥ दोहा ॥ आयुवरससतनेपक
कीनवकरतनुपरशरीर ॥ नांगचिन्हतनुवरनमैगु
णसागरगंभीर ॥ ॐ ह्रीं ॥ पार्श्वजिनपंचकल्या
निकेभ्यो ॥ अर्घ ॥ २३ ॥ सिद्धारथवंशनकेहै

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गदि होइ जनम मनालियैं॥ हरिओ ऐनी स्वरन महिन
हंपेहिया॥ अष्टाठ लुजीवर रैनलपधारिया॥ वैइणावेसा
मीरथां मवलुरहि पाइ कैं॥ थिर वैठी नीसि वथानिक
मैं नाइ कैं॥ दोहा॥ रहा हम्मार वरषा वनमु पंदह धनुषश
तेर॥ १ घमांबीरिंक्रू पक्षु केरो भवोइथि मीर॥ ॐ ह्रीं॥
नमनां घजिन पंच कल्यांन कष्यो॥ अर्घं॥ २१॥ लिय
देवी सुपांमजनमवर्विजपके नंद॥ नगर द्वारका
नम्मल हिमा हैकुल नम चंद॥ चाल नंदीसुर द्व
नन की॥ अपराजित नमौंथि मां नगर्भ मैं वास कियौ
कातिक सुदि छठि मांतन सुरगन हरष हियो॥ सा
उन सुदि छठि दपा गुचित्रा नष्यन परी॥ नमु जनम
नम पहर आगिरवरनक्रुव कियौ॥ जनमन रिला
श्री जिनराज नपकौं वन आई॥ अश्वन सुदि एकम
का मकेवल निधपाई॥ अषाट सुदि हम मोलसि पु
रवास करी॥ मैनाचन तीर्थ [illegible] बोनमवउ प्पम पहरो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥न:पं:॥
॥१२॥

पार जिनगुणकी अथमालका गाऊं गुरु अनुसार
पद्धरी छंद ॥ जय चौवीस जिनराज देव ॥ सुर
नर मुनि नुत पद करि सेव ॥ ऐ धरै हैं पंच कल्याण जोग
तिणकों अवधारण नमुं नरू लोग ॥ जय गर्भ धरो जि
नराज देव ॥ तापहिली छै महीना सो सेव ॥ सुर रतन वृ
ष्टि कानेअपार ॥ पंद्रह महीना सो आनंदकार ॥ हुए अ
वधि थकी जिन गर्भ जोण ॥ आज्ञा कुबेर कों दई आन
जिन हेत रत्नजोतन पुरुष नायु ॥ उपमा जिनकी दीजे
लोकाय ॥ माता को सेवै सची आय ॥ आज्ञा लिया
की करती बनाय ॥ पुन जनम भयो जिनराज जाण
देव चार भवन सुजनस पुर्वे माण ॥ हिवमे पंदा बाजे
अपार ॥ जोतिक हरिनाद विचारसार ॥ भवन त्रैक हाथुन
सघनाद ॥ विन्तर हर्षि : मट्टसाथ ॥ आसन कंप्या
थरहा वंश ॥ तब जोणा जनम्यो श्री जिणंद ॥ तब
सिंघासन आगै सो आय ॥ कर नमस्कार आनंद पाय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रसलादेवीमाय कुंडलपुरमिहि जनमलहिं नाथवंश
उपनाय॥ उनिग्रा विलंवना छंद॥ नमिहौं पुष्पोत्त
रसो विमानन गर्भवसि छठ असाढ सोतां तान् सैव
सुरेन सनन नमन लिया उत्तफागुण सुरगरनव कि
या मार्गावदि दशमीदिन तपलियौं संगलसुदैसमाय
हौं भयौं वद अमावसकातिककीगणी स्यागग्रहस
वभव सिवत्रिपदवी॥ दोहा॥ गरभवरहक आपुन
सुमानहांथवननरीशा सिघमैकेनुवगालैमेलीएा
भुवनईश॥ उद्गीत॥ श्रीमहावीर जिनपंचकल्या
निकमो॥ अर्घ॥ २४॥ कुसमलता छंद॥ श्री
वीमजिनके पंचकल्यानिकअमनसुभगाई॥ दूंदभनैं
महयांगामक कलमिल हारव वजाई॥ सकभाव करहीं व
भलेकरमैं गुणगाऊं पसुविधि द्रव्य मिलाइसुगुर
रणअर्घचढाऊं॥ पूर्णार्घ॥ २५॥ अथजै
माला दोहा॥ गुणअनंत सागर प्रभू सुरगुरलहेंनन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

॥ जै४ ॥
॥ १३ ॥

हाथन हिनन हांसैं सो ल्याए ॥ नाना कोटी मैं नोटी से
आए ॥ गुणलौं अनन्त किऐं सो आए ॥ नाथेई थेई थेई
थेई नाचत निहार ॥ दुम दुम दुम दुम बाजै मृदंग ॥ ननन्न
ननननननाल संग ॥ ननननननबीन सारंग सोर
छमछमछमछम नूपुर बजत ओर ॥ फिरफिरफिरफिर
फिरकी सो बाल ॥ १६ ॥ इम १६ १७ धरनतांन ताल
धरन गीन सांगीनु पाए ॥ अधिको नाकों धरनन क्राए
इहविधि कानन्माभिषेक सार ॥ गुरु त्वर गुरु गुरु गेह
रखधार प्रभु तन कियौ हितु मना पाल ॥ जाको कालष
नामि पौ जगननाल ॥ ननो मिल लौकानि फेदेव आ
ए प्रभु नकानि करि निज थांणे आए ॥ गुनरशिव को
ल्यो से सुरेश ॥ नाप्रचउ वन कीकौं प्रवेश ॥ सिद्धन कुं
कीक्रौं नमस्कार ॥ दीक्ष्या लीक्रौ करनी सोधार ॥ नव
धरनज्ञाणमोनु मैं आंतरि है अणेक उपजो सो आं
ता ॥ हण कर्म घाति पाचार बीर ॥ नय केवल ज्ञाण भयो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मलिनिकरुवैसेंनसुरभयेंलैपार॥ औरपवनगमनलीकैं
भंगार॥ चलभाषेउकेनिकरसोप॥ अपअपनेपनअप
धुलसोहेय॥ परस्परनोनरईश्रुभाय॥ तुलनगरप्र
वेशाकिंपोमोजाय॥ माहिंपीमालाहिंगगईआंन॥ मा
पामईविंद्रारचीओआंल॥ प्रभुकौउठाइंअहरसोल्याय
पतिकौसौपेंआनंदपाय॥ लषसुपनुगलनैनचपि
हार॥ नहिंद्रपतिभेरकीनेहमार॥ गजपतिपेंमिलप
नधौसोय॥ गिरपतिकीओरचलेसोजाय॥ तिंपास
नपायोपतिनेश॥ भयेकलशओरसागरलेउरसमि
नशिरपरधारईसोजोय॥ सोधर्म्मअवरईशानदोय॥
अरुसहश्रआंठकलसामोहार॥ जिनकौंविसनाउ
विचार॥ गहेरवनुजोजनउदहेसार॥ इकजोजनकौ
रमुखनिहार॥ इहिविधिकाकेंजिनकोंपोसुरेश॥ बहु
विधसुनाचोकोचुविशेष॥ पुरांनमिषपनतिल
श्रृंगारकीऊ॥ जहांभूषनपोहिरायहोइ॥ हैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

॥नय॰॥ सोकोसुषदीजैमोक्षफल॥घत्ता॥छंदत्रभंगी॥
॥१४॥ नयजयजिनराजासबसुषकाजा॥होमहाराजाउप
हारा॥मैथारणगहीहैअरजयहीहै॥सेवकहौंतुबचरण
तनौ॥महाअर्घं॥गीतकाछंद॥ जोजनहजिनके
चरणअंबुजपरमप्रीतिलगायजी॥मनवचनतनसुह
भुदुकरिकैहर्षकरगुणगायजी॥सोलहपइंद्रनरेंद्रप
दुफनेंद्रकेसुषआदेरे॥कमकाठकर्मजेजौरजगके
मुक्तिभाकूंवरे॥इत्याशिर्वादः॥दोहा॥छंदभेद
समुझोनहीनहींपिंगलकोंज्ञाण॥तुकअक्षरघटबे
ढसकलसोधलेऊबुधवांन॥क्रियाहीनबुधहीनहो
अरप्रमादमैंलीन॥परजिनभक्तप्रभावतेपूजासमा
पतकीन॥शरणगहौंजिनराजकोशुभफलभएसब
काज॥उगरणपतिविनतीकरैराषौमेरीलाज॥छंद॥
॥त्रिभंगी॥ भभुतुमचरणगहआई॥भवभवके
जेकर्मलगेसदुमेरेदुखदाई॥तिनकोंउमेषेघनौ

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोधीर हारमेमोहारणलिखीयौविशाल मणिमईनह
समकहेमकनलाल वेदीअरकोटसोभूमिजांण नाना
रचनानामश्चनखांण दशदोयसभाओरलसनतूप
मध्यगंधकुटीराजतअनूप तापरसिंघासननीनधा
रराजतत्रभुवनकेईशसार वृषभमानहारजीउरनिधुअ
सेस अनमयअनेकरीसनविश्राम प्रभुवाणीवरषत
मेघधार सबजीवनकेआनंदकार कीन्हौविहारपु
णसमयपाय धर्मोपदेशभीपनसुनाय फेकमहीना
जोगनिरोधधार हनोकरअधिघाकर्मचार शिवथां
नगएजिनसमनकोय नहिजनमनराअरमनहोय
दरसनअरज्ञांणअरांनगांण तिननाहीसुषवीरजे
षषांन तनमेंबाधानांहीसोहोय नहिअधिकाहीं
नहींसनकोय जोमांगगएसनशिवमझार तामें
धुअनमोतेरथार इनभांइअनंतेगुननसहत सिधनकुं
गुरवज्ञातेमासिद्ध भपजअपासिंधकरूणापाल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ निर्वानि ॥
॥ २५ ॥

सोपचरननकीसेवा ॥ दोहा ॥ तुमदयालतुमजग
तपनिमिवहरसीभगवांन ॥ शिवसेवाफलदीजिये
नाराचननिजनांण ॥ संवतेकपदार्थसगलिमि
लायकाठीक ॥ पूरनपाठभयौंसोनवभाइकनननव
मीक ॥ इतिश्रीजिनपंचकल्याणिकविधानसंपूर्ण
तंनमः ॥ सिद्धेभ्यः ॥ अथनिर्वाणमंगल
विधानप्रारंभते ॥ दोहा ॥ वंदौंश्रीभग
वंतकैंभावभक्तशिरनाय ॥ पूजाश्रीनिर्वाणकी
सिद्धक्षेत्रसुषदाय ॥१॥ द्वीपअढाईकेविषैसिद्धक्षेत्र
जांण ॥ जिनकैंपंचकल्याननमनवचनधरध्यांन ॥
पुणइसआरअक्षेत्रमेंजेजिनपुंकलहाय ॥ तिनकी
मैंवंदनकरौंभवभवहोअसहाय ॥ स्थापनं ॥
अडिल्ल ॥ पावनमहाउत्कृष्टमोक्षमंगलसही
आदिअनादिसंसारमांगुमुनिकैलही ॥ तिनकेचरण
आंसेवतनसेंसिरनाइकें ॥ अह्वाननविधठांणकों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाउनमारनमूलीरोपनघानीमैंपेरे।तेम्यकंठकी
परणोरे।नामैंसीसैंओरजोकरजवहीमुषमैमडोरे।न्हां
सैंनिकमपभूयाया।भयथधनभएकारुष्यनहांना
ननहीगाया।भूषअरुप्यासहीभारी।मनुष्यनकाप
कमकरपाया।गर्भवासनवमासरहाहूमहाअभ्युच
काया।नहांसुनिकसननमलीका।बालपालननी
नारणापणवलीरुअनेकसहिनैमैंस्वार।१६वीपाशी
सुषनहींभोगायेनरए।आरनजुननगिप्राणसेकैंदी
भयाभयाकर्मपेरा।काजनहीमरोरुपाधारी।भरक
भरकाफिरफिरगतिधाधासहैंदुष्यभारी।रूपा
अवरूपानाथकीनी।नुमर्दयालसिवररामीसाहूव
रनैनीजसलीजै।औरनहिनाचनहौंदेवा।नुमसमान
कोईनहिस्वांमीकारेदेषालेषा।रूपाअवरूपानाथ
कीजै।नुमरुपालसिवररामीसाहिबदेवनैंजैगाली
जैंओरनहीनाचनहींदेवा।जोतैसापहसंसार।१६३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चरनधराधांल अवमैलरलगहीनुमआंत। भवदाधपार
उतारणजांत ॥ ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र के आरजखंड संबंधी
सिद्धक्षेत्रेभ्यो भवआतापविनाशनाय निर्वपामीति स्वाहा ॥
अक्षतं ॥ ३ पुष्प सुगंध मनुपकै कार पूजौ सिद्धक्षेत्र
मंदार लहौ निर्वान पूजौ मनव ॥ ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र के
आरजखंड संबंधी सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय
निर्वपामीति स्वाहा ॥ पुष्पं ॥ ४ वरनैवेद्य मिष्ट महकाय
पूजौ सिद्धक्षेत्र समभाय लहौ निर्वान पूजौ म० ॥ ॐ ह्रीं
भरतक्षेत्र के आरजखंड संबंधी सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगवि
नाशनाय निर्वपामीति स्वाहा ॥ नैवेद्यं ॥ ५ दीप रतनम
यने जगमगाय पूजौ सिद्धक्षेत्र सुखदाय लहौ निर्वान पू
जौ ॥ ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र के आरजखंड संबंधी सिद्धक्षेत्रेभ्यो
मोहांधकारविनाशनाय निर्वपामीति स्वाहा ॥ दीपं
धूप सुगंध लहै दसअंग पूजौ सिद्धक्षेत्र सर्वांग लहौ नि
र्वान० पूजौ मन ॥ ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र के आ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथष्ठापनं ॥ ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रके आर्यखंड संबंधी सिद्ध
क्षेत्रेभ्यो अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं ॥ अत्र ति
ष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥ अत्र मम सन्निहितो भव
भव वौषट् सन्निधापनं ॥ अथ अष्टक ॥
॥ ढाल सोलहकारणकी चालमें ॥
शीतल उज्जल निरमल नीर । पूजौं सिद्धक्षेत्र गंभीर । लहैं
निर्वान पूजौं मन वच तन धारि ध्याय । भव पैसार न गहौ
तुम आय । भवदधि पार उतारन जाय ॥ ॐ ह्रीं भरतक्षे
त्रके आर्यखंड संबंधी सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविना
शनाय निर्वपामीति स्वाहा ॥ जलं ॥ १ ॥ चंदन घि
स कपूर मिलाय । भव आताप हरन सुखदाय ॥ लहैं
निर्वान पूजौं मन ॥ ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रके आर्यखंड सं
बंधी सिद्धक्षेत्रेभ्यो भव आताप रोग विनाशनाय निर्व
पामीति स्वाहा ॥ चंदनं ॥ २ ॥ अमल अखंड तंदुल लैके
य पूजौं सिद्धक्षेत्र सुखदाय । लहैं निर्वान ॥ पूजौं मन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

॥ निर्वान४ ॥
॥ १७ ॥

पारसरनतुमआइकें ॥ ॐ ह्रीं ॥ श्रीकैलासपर्वत
तैंश्रीऋषभदेवतीर्थकर दशहजारमुनिसहितमो
क्षपधारेवहांतैंऔरमुनिमोक्षपधारेहोहितिन
कौअर्घमहाअर्घनिर्वपामीतेस्वाहा ॥ अर्घ ॥ १
चंपापुरतैंमोक्षगयेजिनराजजी ॥ वासपूज्यमहा
राजकर्मछयकारजी ॥ तिनके४भवदधि४ ॥ ॐ ह्रीं
चंपापुरतैंवासपूज्यस्वामीहजारमुनिसहित
मोक्षपधारेअरवहांतैंऔरमुनिमोक्षपधारेहो
हितिनकौअर्घमहाअर्घनिर्वपामीतेस्वाहा
अर्घ ॥ २ श्रीगिरनारसिखरजगमैविख्यातहै
सिद्धपधुकेनाथभयेनेमीनाथहै ॥ तिन४ भवद०
ॐ ह्रीं ॥ श्रीगिरनारसिखरसेतीश्रीनेमनाथती
र्थंकरपांचसैंछतीसमुनिसहितमोक्षपधारे
तिनकूंअर्घमहाअर्घनिर्वपामीतेस्वाहा ॥ अर्घ
३ पावापुरकेपरमसरोवरकैवीचमहावीरजी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रजषंडसंबंधीसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनायनिर्व्व
पामीतिस्वाहा ॥ धूपं ॥ ७ फलप्रासुकउतमअति
सार सिद्धक्षेत्रकोंक्षनदाता ॥ जैहैंनिर्वांन ॥ पूजौमनु ८
ॐ ह्रीं ॥ भरतक्षेत्रकेआरजषंडसंबंधीसिद्धक्षेत्रेभ्यो
मोक्षफलप्राप्तायनिर्व्वपामीतिस्वाहा ॥ फलं ॥ ८
अरघकौंनिजमाधिकमल पूजौसिद्धक्षेत्रकरभ
के ॥ जैहैंनिर्वांन पूजौमनवचतन ॥ ॐ ह्रीं ॥ भरतक्षे
त्रकेआरजषंडसंबंधीसिद्धक्षेत्रेभ्यो ॥ अर्घं ॥ ९
चौपाई ॥ तीरथसिद्धक्षेत्रकेसबै जंबामेरी
पूजौअबै ॥ जैहैंनिर्वांन पूजौमनवच ॥ ॐ ह्रीं ॥ भरतक्षे
त्रकेआरजषंडसंबंधीसिद्धक्षेत्रेभ्योअर्घमहाअर्घ
निर्वपामीतिस्वाहा ॥ पूर्णार्घं ॥ १० ॥ अथप्र
त्येकअर्घपूजन ॥ अडिल्ल ॥ श्रीआदीस्वर
रिषभदेवनिर्वांनन श्रीकैलासगिरिसोंउपजोजानि
तिनकेचरनजजोमैमनवचकायकैं भवदधिउतरौ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राम हनू सुग्रीव नील महां नील जी ॥ गव गवाद इत्या
दि गये शिवतीरजी कोडि निन्यानवें मुक्त तुंगीगि
र पाईकें तिनके चरण जजों मैं मन वच काइकैं ॥ ॐ ह्रीं
राम हनूमांन सुग्रीव नील महां नील गव गवा इत्या
दि तुंगीगिर पर्वत सें नौ निन्यानवे कोड मुनि मुक्त प
धारे तिनकूं अर्घ महां अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥
अर्घ ॥ ७ वरदत्तादि वरांग मुनिंद्र सो नाम जी ॥ सागर
दत्त महांन परम गुणधाम जी ॥ तारावर नगरतें मुक्त
भे सुखदाय हैं तीन कोड अर लाख पंचास सो गा प
हैं ॥ ॐ ह्रीं तारावर नगरतें वरदत्त वरांग सागरदत्त
दि साढे तीन कोड मुनि मुक्त पधारे तिनकौं अर्घ म
हां अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ अर्घ ॥ ८ श्री गिरना
र सिषर जग मैं विष्यात हैं कोड बहत्तर अधिक अ
सात हैं शंभु प्रद्युम्न अनिरुद्ध मुक्ति कौं पायकें
तिनके चर्नन ॥ ॐ ह्रीं गिरनार सिषर सें तीनि कुं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्ध भये हण कर्म कौ सुरनेवन्न जिनके ४ भवदधि
ॐ ह्रीं ॥ पावागिर के पद्मसरोवर मध्य सेती महा
वीर स्वामी छत्तीस मुनि सहित मोक्ष पधारे तिनकूं
अर्घ महां अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ अर्घ ॥ ४
श्री सम्मेद सिखर सिवपुर कौ द्वार है ॥ बीस जिनेसु
र मुक्त भये भवपार हैं ॥ जिनके ८ भवदधि ७ ॥ ॐ ह्रीं
श्री सम्मेद सिषर सेती श्री बीस तीर्थंकर मोक्ष प
धारे अरु सिखर सेती और मुनि मोक्ष पधारे
होहि तिनिकौ अर्घ महां अर्घ निर्वपामीति स्वा
हा ॥ अर्घ ॥ ५ नंगानंग दोय राजकुमार जी ॥ मु
नगोह सोनागिर अगु है निकारमी ॥ सांढे पांच कि
र भये सिवगामी ॥ १ औ पन वच काय लहो सुष सा
रजी ॥ ॐ ह्रीं ॥ सोनागिर पर्वत सेती नंगानंग
राजकुमारादि सांढे पांच कोड मुनि मोक्ष पधारे
तिनकूं अर्घ महां अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ अर्घ ६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आठकोड़मुनिसहितनमैंमनलायकैं जिनकेचर्नः
ॐ ह्रीं गजपंथसिषरसेतीमानवलभद्रकूं आद
देआठकोड़मुनिमुक्तपधारेजिनकूंअर्घमहांर्घनि
र्वपामीतिस्वाहा ॥ अर्घं ॥ १२ ॥ रावणकेसुतआदि
पंचकोड़जानिये ॥ ऊपरलाषपचासपरमसुषमांनि
ये रेवानदीकेतीरमुक्तमैजायकैं जिनकेचर्नः ॥ ॐ ह्रीं
रेवानदीकेतीरसेतीरावनकेसुतकौंआदिदेसाढे
पांचकोड़मुनिमुक्तपधारेजिनकूंअर्घमहांअर्घनि
र्वपामीतिस्वाहा ॥ अर्घं ॥ १३ ॥ देचक्रीदशकामकुं
मारमहांबली रेवानदीकेपश्चिमसिद्धकूटहैं भली
सांढ़ेतीनकिरोड़मुक्तकौंपाईकैं जिनकेः ॥ ॐ ह्रीं
रेवानदीकेपश्चिमभागमैंसिद्धकूटसेती दोचक्री
दशकामकुमारकूं आदिदैसाढ़ेतीनकोड़मुनिमु
क्तपधारेजिनकूंअर्घमहांअर्घनिर्वपामीतिस्वा
हा ॥ अर्घं ॥ १४ ॥ दक्षिणदिशामैंचूलउंगसिषर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मारमदमनकुमारअनुरुद्धकुमारादिबहुनरकोडिसां
नैमैंमुनिमुक्तपधारेतिनकूंअर्घमहांअर्घनिर्वपां
मीनेस्वाहा॥ अर्घ॥ ९ रामचंद्रकेसुतदोयनि
नदिस्याधरी॥ लाडनरेंद्रआदिमुनिआठौकर्महा
पावागिरकेसिषरध्यांनाधरकैंसही॥ पांचकोडमु
निसहितपरमपदवीलही॥ ॐ ह्रीं॥ पावागिरसि
षरसेंलाडनरेंद्रआदिपांचकोडमुनिमुक्तपधा
रेतिनकूंअर्घमहांअर्घनिर्वपांमीनेस्वाहा॥
अर्घ॥ १० पांडवतीनद्रवडराजानुमनांनिपौ आठ
कोडमुनिचरमशरीरीमांनियौं॥ श्रीसेतुंजासि
षरमुक्तवरपाइकें तिनकै॥ ॐ ह्रीं॥ सेतुंजासिष
रसेतीपांडवतिनैकौआदिदेआठकोडमुनिमो
क्षपधारेतिनकूंअर्घमहांअर्घनिर्वपामीने
स्वाहा॥ अर्घ॥ ११ श्रीगजपंथसिषरपर्वत
सुवधांमहै मुक्तगएबलभद्रमांनअभिरामहैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ नि४ ॥ पामीनेस्वाहा ॥ अर्घं ॥ १७ ॥ बालमहाबाल मुनी
॥ २० ॥ सुरे दोय है ॥ नांगकुमार मिलाय तीन रिष होइ है ॥ श्री
अष्टापद सिषरतैं मुक्त मैं जाइकैं ॥ तिनके ४ ॥ ॐ ह्रीं ॥
श्री अष्टापद सिषरसेती बाल महां बाल नागकु
मार मुनि तीन मुक्त पधारे अरु बहां ते और मुनि
मुक्त पधारे होय तिनकूं अर्घ महां अर्घ निर्वपामी
नेस्वाहा ॥ अर्घ ॥ १८ ॥ अचलापुर की दिसा मैं ईशान
महां लसैं ॥ नहां मैंड गिर सिषर महां पर्वत लसै
तीन कोड अर लाष पचांस महां मुनी ॥ मुक्त गये ध
र ध्यांन कर्म अरि तिन हनी ॥ ॐ ह्रीं ॥ अचलापु
र की दिसा मैं मैंड गिर पर्वत के सिषरसेती सांढे ती
न कोड मुनि मुक्त पधारे तिनकूं अर्घ महां अर्घ नि
र्वपामीनेस्वाहा ॥ अर्घ ॥ १९ ॥ वंसस्थल वन प
श्चिम कूं पल पहार है ॥ कुलभूषण देशभूषण मुनि
सुषकार ॥ नहांतैं मु[illegible] ध्यांन धारी मुक्त मैं जाय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain: Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महां ॥ वडनगरीवडनगरनहांशोभितलहां इंद्रजीतअ
रु कुंभकर्णव्रतधारैकें ॥ मुक्तगयेजमुनीनमुष्यक
रपाईकें ॥ ॐ ह्रीं ॥ दक्षिणदिशमैंचूलगिरउतंगशि
षरसेतीइंद्रजीतकुंभकर्णमुनिमुक्तपधारेतिनकौं
अर्घमहांअर्घनिर्वपामीतेस्वाहा ॥ अर्घ ॥ १५
अचलानदीकेतीरपावागिरसिषरतो ॥ लमदभद्र
मुनिचारजतीहैहिरदन्ती ॥ नहांतैपरमधांमकेसुषपा
यैकें ॥ तिनकेंउ ॥ ॐ ह्रीं ॥ अचलानदीकेतीरपावागि
रसिषरसेतीलमदभद्रादिच्यारमुनिमुक्तपधारेति
नकुंअर्घमहांअर्घनिर्वपामीतेस्वाहा ॥ अर्घ ॥ १६
फलहोडीवडगावअनूपनहांवसैं ॥ पश्चिमदिसमैं
द्रोणागिरमहांपर्वतललैसें ॥ गुरदत्तादिमुनीसुरशि
वकौंपाईकें ॥ तिनकेचर्नउ ॥ ॐ ह्रीं ॥ फलहोडीवडगा
वकीपश्चिमदिसमैंद्रोनगिरपर्वतसेतीगुरदत्ता
दिमुनिमोक्षपधारेतिनकुंअर्घमहांअर्घनिर्व

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

रेसंमेदगिरउन्नमथांनसोपाइकैं ॥ वरदत्तादिपंचमुनि
मुक्तमेंनाइकैं ॥ ॐ ह्रीं ॥ श्रीपार्श्वनाथस्वामीकौ स
मोसरनपासरेंश्रीगिरसिषरसेती वरदत्तादिक
पांचमुनिमुक्तपधारेतिनकूं अर्घ महा अर्घ निर्वपा
मीतिस्वाहा ॥ अर्घ ॥ २३ पोदनपुरकौंराज्यत्याग
मुनिजेभए ॥ बाहूबलहनकर्मप्रथमसिवपुरगए
तिनकेंथभवदधिठ ॥ ॐ ह्रीं ॥ पोदनपुरकौंराज्यत्या
गवाहूबलीमोक्षपधारेतिनकौंअर्घमहाअर्घनि
र्वपामीतिस्वाहा ॥ अर्घ ॥ २४ श्रीतीर्थंकरचतुरवी
समभगवांनहैं ॥ गरभजनमतपज्ञांनभएनिर्वानहैं
तिनकेंथभवदधिठ ॥ ॐ ह्रीं ॥ चतुरवीसभगवांन
तीर्थंकरपंचकल्यानिकधारनेस्पोअर्घमहाअर्घ
निर्वपांमीतिस्वाहा ॥ अर्घ ॥ २५ तीनलोकयमें
तीरथजेसुषदायहैं ॥ तिनमांतिवंदेंभावसहितशि
रनायहैं ॥ तिनकीभक्तकरौमैंमनवचकायसेंभव

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कैं जिनके चर्नं ॥ ॐ ह्रीं ॥ वंशस्थलके पश्चिमदिसमैं
कुंथगीरसिषरसेती कुलभूषणदेशभूषणमुनिमु
क्तपधारे जिनकूं अर्घ महां अर्घ निर्वपामीति स्वाहा
॥ अर्घ ॥ २० जसहारथानाकेसुत पांचसतकहे
देशकलिंग मद्यारन तहां मुनि भये ॥ शुभ फल ध्यां
नतैं मुक्तिगमन कूं सुथपा ३ कैं ॥ जिनके चर्नं ॥ ॐ ह्रीं
कलिंगदेशतैं जसहारथानाके पांच सै पुत्र मुनि हो
य मोक्षपधारे जिनकों अर्घ महां अर्घ निर्वपामी
ति स्वाहा ॥ अर्घ ॥ २१ ॥ कोटिसिला सुभ दक्षिण
दिशामैं है सही ॥ निश्चै सिद्धक्षेत्र है जिनवर नै कही
कोटि मुनी मुक्त भये सुथपा ३ कैं ॥ जिनके चर्ण
॥ ॐ ह्रीं ॥ दक्षिणदिशामैं कोटिसिलासेती कोटमु
नि मुक्तपधारे जिनकूं अर्घ महां अर्घ निर्वपामी
ति स्वाहा ॥ अर्घ ॥ २२ ॥ समोसरनश्रीपार्श्वजिन
सरदेवकों ॥ करमतुरतसुरसेयपरमपदलेयकों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नपु:

२२

श्रीपावागिरिमैंमोक्ष्यथांन अष्टकिरोडमुनिराजमांण
पांडुवतीनद्रेउराजामहांन श्रीसेत्रुंजैमुक्तपाय ति
नकौंमैंमनवचसीशनाय गजपंथसिषरनगमैंविशा
ल मुनिआठकोडजेरपाल बलभद्रसातसैंमुक्तैमुनि
य तिनकौंहममनवचसीसनाय रांवनकेसुतअरपां
चकोड पंचासलाषउपरसोजोउ रेवाकेतटथैंतिनमु
क्तलीन फागुफलपांतलैंकर्मछीन दोयचक्रवर्त
दशकामदेव आहूटकोडमुनिवरमोखेव रेवाकेपछि
मकूटजोंण तिनवरीमुक्तवसुकर्महांण दक्षिणदि
शामैंगिरचूलजोंण तहांइंद्रजीतकुंभकरणमांण तेमु
क्तगयेवसुकर्मजीन सोसिरसेववंदौंविनीत पावा
गिरसिषरमहांबीरजोंण तहांसवरणभद्रमुनिचारमां
ण तिनमुक्तपुरीकूणमनकीन सिरनमायगहमकुं
सोधदीन फलहोडीवडगावसोअनूप पश्चिमदिश
मैंद्रोणगिरसरूप गुरदत्तादिकसिवपदलहाय ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रषिउनतैंपारसनननुमआदिकैं ॥ॐ ह्रीं॥ तीनलोकम
मैंतीरथजात्राहैंतिनकौंअर्घनिर्वपामीतिस्वाहा
॥अर्घ॥२६॥अथजयमाल॥पधरीछंद॥
श्रीआदीसुरवंदैंमहान ॥ कैलाससिषरतैंमोक्षथाण
चंपापुरतैंश्रीवासपूज्य ॥ तिनमुक्तलईअतिहर्षहूज्य
उर्जंतनेमजीमुक्तपाय ॥ पावापुरतैंश्रीवीरराय सम्म
दसिषरश्रीमुक्तद्वार ॥ श्रीबीसजिनेसुरमोक्षधार सो
नागिरसाढेपांचकोड ॥ तुंगीगिरराममहन्नसोओड नि
र्वानतैंकोडमुक्तैंमझार ॥ तिनकेहमचरननमैंत्रिका
ल ॥ वरदत्तादिकवरांगमुनेंद्रचंद्र ॥ नहासायरदत्तमहीम
ंद ॥ तारावरनगरतैंमोक्षपाय ॥ तिनकेचरननतैंमहम
सीशनाय ॥ सिंधूमधमनअनुकूलभाय ॥ गिरनारसि
षरतैंमोक्षपाय ॥ बहत्तरकोडसैंसातजाण ॥ तिनकूं
मैंमनवचकरैंध्याण ॥ श्रीरामचंद्रकेदोयपुत्र ॥ अ
रपंचकोड ॥ मुनिसहितहूत ॥ पावागिरिदूरस्यादिजाण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भविजनगाईयौं ।। स्वर्गमुक्तसुषदायकं ठमैलाईयौं
सानैंसबसुषहोयसुजशकोपाईकैं ।। भवदधिउतरौं
पारसरनतुम्हआईकैं ।। आशीर्वाद ।। दोहा ।।
नरभवउत्तमपाईकैं औसरमिलियौमोय ।। सो मै
रथांतलगायकैं शरणगहीप्रभुतोय ।। १ ।। बालक
समहममंदहैं भक्तथकीगुणगाय ।। भूलचूलतुम
सुमसोधियौमुनियौसज्जनभाय ।। २ ।। औगुणमम
मनदीजियौं गुणगहिलीजोंमीत ।। पूजानित्यप्र
तिकीजिए करजिनवरसौंप्रीत ।। ३ ।। समकृतअष्टा
दशसमनककसतरसकमहांण ।। भावेंकरनसोसम्य
मीप्राणभयौंसोजांण ।। इतिश्रीनिर्वाणपूजनवि
धानसंपूर्ण ।। २ ।। अथश्रीसम्मेदशिष
रसिद्धक्षेत्रपूजालिष्यते ।। दोहा ।। सिद्ध
क्षेत्रतीरथपरमहै उत्कृष्टसोथांन ।। सिषरसम्मे
दसदानमैंहोयपापकीहांण ।। १ ।। अगणितमुनि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनकौंहमवंदैंसीसनाय॥ बालमहाबालमुनिसदेय
श्रीनागकुमारमिलतीनहोय॥ श्रीअष्टापदथैंमुक्तिहो
य॥ नेभाठकर्ममलकोसोधोय॥ अचलापुरकीदिशमें
ईशांन॥ जहांमेंढगिरनामप्रधांन॥ मुनितीनकोडि
उपरसोजोउ॥ पंचासलाखमिलमुक्तहोय॥ वंसस्थ
लवनकुंथलपहार॥ कुलभूषणदेषभूषणसोसार
भारिउपसर्गकियोविनीन॥ जिनमुक्तलईअरकर्म
छीन॥ जसहरकेसुतनतनकपंचसार॥ कालिंगदेशतें
मुक्तधार॥ मुनिकोडिसिलातेंमुक्तलीन॥ जिनकूंहमम
नवचनमनकीन॥ वरदत्तादिकपांचौमुनीस॥ जिण
मुक्तलीवेंहैसोईस॥ श्रीबाहूवलअधिकप्रजान
वसुकर्मनासकैंमोक्षथांन॥ जहांपंचकल्यान
जिनेंद्रदेव॥ तिणकीहमनितगावेंसोसेव॥ इहअर
जगरीवनकीदयाल॥ निर्वाणदेऊहमकोंसुहाल
घता॥ अरिल्लछंद॥ यहगुणमालमहानसुभ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सिषर
॥२४॥

सबगुणनईश॥१॥ फेरजहांतैंकेवलसोधाम॥जिन
वरकौंभवमेरीप्रणाम॥ पधरि छंद॥ संमेद
गहैंतीर्थभारीसवनकौंउजलकरैं॥चिरकालकौं
कर्मलागदूरसबैंछिणमैंटरैं॥ है परमपावन
पुण्यदायकअतुलमहिमाजांनिये॥ हैअनूप
सरूपगिरवरताशुपूजांठांनिये॥ दोहा॥ श्रीस
मेदसिषरमहांपूजौंमनवचकाय॥ हरतचतु
रदुष्यकौंमनवांछितफलदाय॥ ॐह्रींश्रीसमेदसि
षरसिद्धक्षेत्रेभ्योअत्रावतरावतरसंवौषट्आह्वाननं॥
अत्रतिष्ठ ठः ठः स्थापनं॥ अत्रममसंनिहितोभवभव
वषट्संनिधीकरणं॥ अथ अष्टक॥
छीरोदधिसमनीरनिरमललीजिये॥कनककं
लसमैंभरिकैधारादीजिये॥ पूजौंसिषरसंमे
दसोमनवचकायजू॥नरकादिकदुष्यटरैंअच
लपदपाइजू॥ ॐह्रींश्रीसमेदसिषरसिद्धक्षेत्रेभ्य

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहांतैंगयेजोकसिवाकेतीर॥ तिनकेपदपंकजनन
मौंनांसेभवकीपीर॥ अरिल्लछंद॥ हैंयहिउ
ज्जलक्षेत्रसोभतिनिरमलसही॥ परमपुनीतसु
थेरमहांगुणकीमही॥ सकलसिद्धथानारमहारम
णीकहैं॥ वंदौनिजसुखहेतुअचलपददेतहैं॥ सो
रठा॥ सिवारसम्मेदमहान॥ जगमेंतीर्थप्रधा
नहैं॥ महिमाअद्भुतजांन॥ अल्पमतीकिमिक
हसकत॥ पधरीछंद॥ सरसउन्नतक्षेत्रप्र
धानहैं॥ अतिसोउज्जलतीर्थमहांनहैं॥ करहैंभ
क्तिसोजेगुणगायकैं॥ वरहैंसुरशिवकेपरपायकैं
॥ अरिल्लछंद॥ सुरहरनरपतिआदिसु
जिनवंदनकरैं॥ भवसागरतेंतिरैंनहीभवदधिपरैं
नहैं॥ सुफलहोयजोजनमसोजेदरसनकरैं॥ जन
मजन्मकेपापसकलछिनमेंटरैं॥ पधरीछंद
श्रीतीर्थंकरजिनवरसोचौंस॥ अरमुनिअसंख्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रमोदमनको॥ अर्घं॥ २४॥ दध्यानीछंद॥ श्रीवी
सतीर्थकरहैं जिनेश॥ अरहंतसंषयऊमेमुनेंद्र॥ जि
नकोंकरजोरकरैंप्रणाम॥ जिनकोंपूजेंनजिशकल
काम॥ ॐ ह्रीं॥ सम्मेदसिषरसिद्धक्षेत्रेभ्यो॥ पूर्णार्घं
१०॥ छंदजोगीरासेकौ॥ श्रीसम्मेदसिषरगिर
उपरशोभाअधिकप्रकाशी॥ विंशतिजहांपरकूटमनो
हरअद्भुतरचनाजोसीं॥ श्रीतीर्थंकरबीसजहांसैं शि
वपुरपहुचेजाई॥ तिनकेपदपंकजजुमैंपूजोअर्घ्यलेक
अर्घचढाई॥ ॐ ह्रीं॥ सम्मेदसिषरसिद्धक्षेत्रेभ्यो॥ अ
र्घं॥ १ प्रथमसिद्धवरकूटमनोहरआनंदमंगलदा
ई अजितप्रभूजहांतैसिवपहुंचेपूजोंमनवचकाई
कोटअस्सीऐकअरबमुनिचउवनलाषसोगाई
कर्मकाटनिर्वाणपधारेतिनप्रतिअर्घचढाई॥
ॐ ह्रीं॥ सम्मेदसिषरसिद्धकूटतैं अजितनाथजि
नेंद्रादिमुनिएकअर्बअस्सीकोटचउवनलाषमुनि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जलं ॥ १ पय सौं घिस मलयागिर चंदन ल्याईये
केशर आदिक पूर सुगंध मिलायये ॥ पूजौं ० ॥ नक्षी ०
सुगंधं ॥ २ तंदुल धवल सो वास सें अखिल धोयकैं हेम
थारन के थार भरौं शुच होईकैं ॥ पूजौं ० ॥ नक्षी ० ॥ अक्षतं
फूल सुगंध मो ल्याई हरष मन आन चढाऊं ॥ राग शोग
निंदनीय मदन सब दूर पलाऊं ॥ पूजौं ० नक्षी ० ॥ पुष्पं ४
षटरस कारनै वेष्ट कनक थारी भरि ल्यावौं ॥ क्षुधा निवा
रन हेतु सो ईजै मन हरषावौं ॥ पूजौं ० नक्षी ० ॥ नैवेद्यं ॥ ५
लैकर मन मय दीप सना सौंलौ जोतनैं हैं ॥ पूजन नेहतु सो ता
ग मोह तम हो तनैं हैं ॥ पूजौं ० नक्षी ० ॥ दीपं ॥ ६ दशविध
धूप अनूप अग्नि में खेवहु ॥ अष्ट कर्म कौ नास होय सुख
पावहु ॥ पूजौं ० नक्षी ० ॥ धूपं ॥ ७ एला लौंग सुपा
री श्रीफल ल्याईये ॥ फल चढाय शुभ वांक्ष मोक्ष फल
पाईये ॥ पूजौं ० नक्षी ० ॥ फलं ॥ ८ जल गंधाक्षित फु
ल सुनैव जलीजिये ॥ दीप धूप फल लैकर अर्घ चढाईये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सिद्ध॰ ॥ २६ ॥

रन्यालिसकहेजिनागममैंइसभांतसैंमुनिसिद्धपदप्रापत
सिद्धक्षेत्रेभ्यो ॥ अर्घं ॥ ४ ॥ अरिल्लछंद ॥ अवचल
चौथोंकूटमहांसुवधामजी ॥ जहांतेंमुक्तजिनेसुरगेरनिर
वांणजी ॥ कोडाकोडीएककमुनीसुरजांनिये ॥ कोडचौरासी
लाषबहत्तरजांनिये ॥ सहसइक्यासीओरसांतसैगाइयैं ॥
कर्पकांटतिवगोश्निकसौगनाइयै ॥ सोथांनिकमैंपूजैं
मनवचकाइजू ॥ पापदूरहोपुनपभवचलपदपाइजू ॥ ॐ ह्रीं
अवचलकूटतैंश्रीसुमातजिनेंद्रादिमुनिएककोडाकोडि
चौरासीकोडबहत्तरलाषइक्यासीहजारसांतसैंमुनिसि
द्धपदप्राप्तायसिद्धक्षेत्रेभ्यो ॥ अर्घं ॥ ५ ॥ मोहनकूटमहां
नपरमसुंदरकहैंहां ॥ पद्मप्रभुमहाराजजहांसिवपदलयो
कोडिनिन्यानवेंलाषसतासीजांनिये ॥ सहसमैंतालि
सओरमुनीसुरमांनिये ॥ सांतसैंकरामनरउपरोवीस
जी ॥ मोक्षगयेमुनिनिनकौनमैंनिनमीशजी ॥ कहैंसं
चाहरदासहूथकरजोरकैं ॥ आवेनासीपदहेउसुकर्म

सिद्धपदप्राप्तेभ्यो ॥ अर्घं ॥ २ ॥ धवलकूट है सो नाम दूसरौं
है सबकौं सुषदाई ॥ संभवि प्रभु सो मुक्त पधारे पापनिम
रकौं टारई ॥ धवलदत्त है आदिमुनी ॥ सुर नौ कोडाकोडी
जांणौ ॥ लष बहत्तर सहस बियालिस पंचसतकत्रयवयां
लौं ॥ कर्मनासकर अमरपुरी गये वंदौं सीस नवाई ॥ पदस्नु
गमनैं भावसैं भवजनु हर्षहर्ष चित लाई ॥ ॐ ह्रीं ॥ श्री
सम्मेदसिषर धवलकूटतैं श्रीसंभवनाथजिनेंद्रादि मुनि
नौ कोडाकोडी बहत्तर लाष बयालिस हजार पांचसैं मुनि
सिद्धपदप्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो ॥ अर्घं ॥ ३ ॥ चौपाई
आनंदकूट महा सुषदाई ॥ प्रभु अभिनंदन सिवपुर जाई
कोडाकोड बहत्तर जांणौ ॥ सत्तर कोड लाष छत्तीस मांणौ
सहस्र बयालिस सतक जो सांत ॥ कहे जिनागम मैं इह भांत
ऐसे ष कर्म काट सिव गए ॥ तिनके पद जुग पूजन भए ॥
श्री आनंदकूटतैं श्री अभिनंदनजिनेंद्रादि मुनि
बहत्तर कोडाकोडि सत्तर कोड छत्तीस लाष बयालीस हजा

सिष॰ ५
२७

नंमस्कार पायौं सुष कौ कंद॥ ललित कूट तैं सिव गए जे वंदौ
सीस नवाय॥ जिन पद पूजौ भाव सौं निज हित अर्घ चढाय॥
ॐ ह्रीं॥ ललित कूट तैं श्री चंद्रप्रभु जिनेंद्रादि मुनि नौ सै
अरु चौरासी लाष बहत्तर कोड अस्सी लाष चौरासी हजा
र पांच सै पचपन मुनि सिद्ध पद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो
अर्घ॥ सुप्रभु कूट तैं सु नाम माला॥ जहां पुष्पदंत कौं
है सो थाला॥ मुनि कोडाकोडी कहे जो भाष॥ अरु कहे नि
न्यानवे लाष चार॥ सात सै सनक मुनि कहे सात॥ ऋषि
अस्सी और ने कहे विष्यात॥ मुनि मुक्त गए जु कर्म्म
काट के तिहिं कर जोर नवाय माथ॥ ॐ ह्रीं॥ सुप्रभ कूट तैं
श्री पुष्पदंत जिनेंद्रादि मुनि कोडाकोडी निन्यानवे लाष
सात हजार चार सै अस्सी मुनि सिद्ध पद प्राप्ताय सिद्धक्षे
त्रेभ्यो अर्घ॥ ९॥ सुंदरी छंद॥ सुभग विद्युत
कूट सौं जानिये॥ परम अद्भुत ताप रमानिये॥ गए सिव
सिव पुर सीतलनाथ जी॥ नमैं हों जिन पद कर धर माथ जी॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

नमोरजैं ॥ ॐ ह्रीं ॥ श्रीमोहनकूटतैं श्रीपद्मप्रभुजिनेंद्रादि
मुनिनिर्वांनगैं कोड़ि निनाणवै लाख सतानवै हजार सातसै
अंतालीस मुनिसिद्धपदप्राप्तायसिद्धक्षेत्रेभ्यो ॥ अर्घ ॥ ६
॥ सोरठा ॥ कूट प्रभांन महांन ॥ सुंदर जगमन मोहनो ॥
श्री सुपार्श्व भगवांन ॥ मुकतगये भवनासकर ॥ कोड़ कोड़
उनंचास ॥ कोड़ि चौरासी जांनियें ॥ लाख बहत्तर जांण ॥ सा
तसहस्र अरु सातसैं ॥ और कहे ब्यालीस ॥ गए तैं मुनि मुकति
गेह ॥ तिनकूं नमूं जिन नीस मन ॥ शिवहाननवाहरनोडकर ॥ ॐ
ह्रीं प्रभासकूटतैं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेंद्रादि मुनि उनंचा
स कोड़ाकोड़ी बहत्तर लाख सात हजार सातसैं ब्यालीस
मुनिसिद्धपदप्राप्तायसिद्धक्षेत्रेभ्यो ॥ अर्घ ॥ ७ ॥ दोहा
पारसनाथ तणो गिरि ललित कूट है नाम ॥ चंद्रप्रभु मुक्ति
गए वंदौं आठौं जांम ॥ नौसें अरव सुजांनियें चौरासी कर
सु मांन ॥ कोड़ि बहत्तर जांनिये अस्सी लाख परवांण ॥ स
हस चौरासी पंच सत पचपन कहे मुनीस ॥ वसु कर्मन कूं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिधपू ४ ॥ २८ ॥

रकमहमुनीसुसहस्रविद्यालिसमुनिसिद्धपदप्राप्तसिद्धक्षे
त्रेभ्यो ॥ अर्घ ॥ ११ ॥ कुसमलताछंद ॥ श्रीसुतसंकुलकूट
परमसुन्दरसुषदाई ॥ विमलनाथभगवांनजहां पंचमगतिपा
ई ॥ सातसतकमुनिऔरविद्यालिसजांनिये ॥ सहस्रकोडि
सातलाषहजारछैमांनिये ॥ दोहा ॥ अष्टकर्मकोनांश
करमुनिशिवपदकौंपाय ॥ तिनकौमैंवंदनकरौंनमनमम
रणदुषजाय ॥ ॐ ह्रीं श्रीसंकुलकूटतैंश्रीविमलनाथ
जिणेंद्रादिमुनिसहस्रकोडिसातलाषछैहजारसातसैवि
यालिसमुनिसिद्धपदप्राप्तायसिद्धक्षेत्रेभ्यो ॥ अर्घं ॥ १२
अडिल्लछंद ॥ कूटस्वयंप्रभुनांमपरमसुन्दरकह्यो ॥ प्र
भुअनंतजिनराजजहांशिवपदलह्यौ ॥ मुनिजोकोडा
कोडीछ्यांणवैंजांनिये ॥ सहस्रकोडजोसत्तरलाषप्रमा
निये ॥ सहस्रसहस्रजोऔरसातसैंगायजू ॥ मुक्तिगयेमु
निजिनपदसीसनवायजू ॥ कहैंजवाहरदासमुनीमनल
लायकैं ॥ शिषरकूंजिनपूजौमनहरषायकैं ॥ ॐ ह्रीं ॥ स्वयं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुनिजो कोड़ि बियालिस जांनिये ॥ परजिनेसु रहि है मांनिसे
कहे और नो लाख बतीस जु ॥ सहस आलिस कहे नतीस जु
और सहांनै नोसै पांच सो जांनिये ॥ एते मुनि सिवपुर कों
औ जो मांनिये ॥ कहां हैं पूजा जे मन लाइ कैं ॥ धरै हैं जन्म न भ
व मैं आइ कैं ॥ ॐ ह्रीं ॥ त्रिपुन कूटतें श्री सीतलनाथ जिनें
द्रादि मुनि कोड़ि कोड़ि अठारह कोड़ि आलिस लाख बतीस सह
स्र नौसै पांच मुनि सिद्ध पद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं
५ १० ॥ द्रोणागिरक्षेत्र की ॥ कृ१नोसं
कुलपरबत मनोहर श्री सिद्ध भले जिनराई ॥ कर्मनास क
र सिवपुर गए जिन मुनिसीश नवाई ॥ कोउ कोड़ि जोक
हे ध्यानवैं ध्यानवैं कोउ प्रमांनलों ॥ ना सु ध्यांनवैं सारे न
वैसे ईकसट मुनीसुर जांहैंलों ॥ नाउ पर च्यालीस कहे हैं श्री
मुनि के गुन गावैं ॥ विविधि जोग कर जो कोई पूजै सह भा
नंद पद पावैं ॥ ॐ ह्रीं ॥ संकुल कूटतें श्री श्रेयांसनाथ जिनें
द्रादि मुनि ध्यांनवैं कोउ अरब ध्यांनवें लाख सोहैन वैसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तैंसें मुनि सिद्धपरमात्मा प्रसिद्धक्षेत्रेभ्यो ॥ अर्घं ॥ १५ ॥ गी
तकाछंद ॥ सांतधार प्रभु कूट सुन्दर पापमलनकों मोहनों
जहां तैं श्रीकुंथस्वामी गये सिवपुर की महि ॥ कोड न को
डी ध्यानतें मुनि कोड ध्यानतें जानिये ॥ लाष बनी सम सह
स ध्यानतें अरु तैं सात सम मानिये ॥ दोहा ॥ और कहै ध्या
नी सम मुनि मुनि रौ हिये मदार ॥ जिन बारू सौ भाव सें कर
भव दधि पार ॥ ॐ ह्रीं ॥ सांतधार कूट तैं श्रीकुंथनाथ
स्वामी और मुनि ध्यानतें कोड़ कोड़ी अरु ध्यानतें कोड़
वनी लाष ध्यानतें हजार अरु सैं सात ब्यालिस मुनि
सिद्धपरमात्मा प्रसिद्धक्षेत्रेभ्यः ॥ अर्घं ॥ १६ ॥ गीता
कूट नाटक परम सुभ सोभा अपरंपार ॥ जहां तैं अर्ह
जिनेंद्र श्रीपद्मे मुक्ति मझार ॥ और निन्यानवें जो मुनि
लाष निन्यानवें औ ॥ कहै महस निन्यानवें ये रौ ह पर
ज्ञोर ॥ अष्टकर्म कौ नासकर अविनासी पद पाय
ते गुरु मम हिरदय बसौं भवदधि पार लगाय ॥ ॐ ह्रीं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभु कूटतैं श्री अनंतनाथ जिनेंद्रादि मुनि छ्यानवैं कोडा
कोडि अरु सत्तर लाख सात हजार सातसै मुनि सिद्धपद प्राप्त
सिद्धक्षेत्रेभ्यो ॥ अर्घ ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ कूट सुदत्त म
हा शुभ जानौं ॥ श्री जिन धर्मनाथ कौ थानौं ॥ मुनि जो को
डा कोडी उनतीस ॥ औरु कहे हरि षट कोडि उनईश ॥ लाख जो न
वै नौ सहस सात जानौं ॥ सत्तर सात रु पंचानवे मानौं ॥ मोक्ष
गए सब कर्मन चूरे ॥ शिवमैं नन्तु सहे भरपूरे ॥ ॐ ह्रीं ॥ सु
दत्त कूटतैं श्री धर्मनाथ जिनेंद्रादि मुनि उनतीस कोडा को
डी अरु कोडि उनईश आरन लै लाख नौ सहस सत्तर सनक
पंचानवे मुनि सिद्धपद प्राप्त सिद्धक्षेत्रेभ्यो ॥ अर्घ ॥ १५
कूट प्रभास महा शुभ जानौं ॥ श्री जिन शांतनाथ कौ
थानौं ॥ मुनि नौ कोडा कोडि जानौं ॥ नौ लाख नौ हजार नौ
सै निन्यानवैं मानौं ॥ मोक्ष गए सब कर्मन चूरे ॥ भए जी
वन कूं आनंद पूरे ॥ ॐ ह्रीं ॥ श्री प्रभास कूटतैं श्री शांति
नाथ जिनेंद्रादि मुनि नौं कोडा कोडि नौं लाख नौं हजार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सिध ॥
३० ॥

ये मुनि सिद्धपदप्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो ॥ अर्घं ॥ १९ ॥ ढार
जोगीरासे की ॥ रेहमित्र धर कूं मनोहर सुन्द
र अति छवि छाई ॥ श्री नमि प्रभु जहां तें सिव पु
र पाऊं वे नाई ॥ नौ सै कोड़ा कोड़ी मुनिवर एक अरब व
खाणौं ॥ लाख सैंतालीस सहस सात अब नौसैं ब्याल
स माणौं ॥ वसुकर्मन कूं नास करि अविनासी पद पा
यौ ॥ चरण सरोजन ज्यां मन वांछित फल पायौ ॥
ॐ ह्रीं ॥ मित्र धर कूट तैं श्री नमि नाथ मुनि नौ सै कोड़ा
कोड़ि एक अरब पैंतालीस लाख सात हजार नौ सै ब्याल
स मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो ॥ अर्घं ॥ २० ॥
ॐ ह्रीं ॥ सुवरण भद्र कूट तैं श्री प्रभु पारस नाथ ॥
जहां तैं सिद्धपद कौं गए ते मां जोर सुग हंथ ॥ ॐ ह्रीं ॥
श्री सुवरणभद्र कूट तैं श्री प्रभु पारस नाथ स्वामी सि
द्धपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो ॥ अर्घं ॥ २१ ॥ पावि ध वीस
जिनेंद्र के वीसों सिखर महान और असंख्य मुनि सहज

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नारककूटतैं श्रीअरहनाथजिनेंद्रादिमुनि निर्वानपै कोड
निर्वानबेलाष निर्वानपै हजार मुनि सिद्धपदप्राप्त
सिद्धक्षेत्रेभ्यो ॥ अर्घं ॥ १७ ॥ १ थपरोठं २ ॥ कूटसं
बलधारमधानि नजर ग्रैलिव्रद पुरमल्लजिनेशनू मुनि
जुगपांगलैं बेकोडप्रमाणिगियां पद्भजिनगुरुरूद्रपमानि
यौं ॥ ॐ ह्रीं ॥ संबलकूटतैं श्रीमल्लनाथजिनेंद्रादमु
निरपानैं बेकोडसिद्धपदप्राप्तसिद्धक्षेत्रेभ्यो ॥ अ
र्घं ॥ १८ ॥ छंद अमादी की ॥ मुनिसोव्रत महारा
ज सदामानंदकेदाई ॥ गुनरनिनामकूटजहांतैं शिवपु
रपाई ॥ निर्वानैं कोडाकोडी जहे मुनि कोडसेनाव
न ॥ नौ लाष जोर गुनें दूर्क्हे नौसै निर्वानुं वै ॥ सोरठा
कर्मनाशकरतार पंचमगतिकेसुखलहे ॥ नारणा
नरणानिहार ॥ मोदुखदूरकीजैसदा ॥ ॐ ह्रीं ॥ निरजर
कूटतैं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्रादिमुनिनिर्वानपै
कोडाकोडी अरसैनावनकोड़ि नौ लाष नौसै निर्मा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सिष२४
३१

सिद्धक्षेत्रेभ्यो   सिद्धक्षेत्र नीरथ सुष
दाई कंदलपापहर होजाई सिषरसीशपरकूट मनोहर दे
षननाहि भविकजनमोहन कहेवीस अलसय संजोग्य म
थमसिद्धप्रभकूट मनोग्य अजितनाथकों मुक्त सोध
म कूट दास फल प्रोषध मांण कूट नैं दरसन फल कहों
कोड बतीस उपवास फल हो इन्ध धवलकूट है नाम सं
भवि प्रभु नहां तैं निर्वांण कूट दरस फल प्रोषद मांण
लाष बियालिस केह ब षातौं आनंदकूट महा सुषदा
यी जहां तैं अभिनंदन सिवपाई कूट नैं वंदन रमजा
यौं लाष उपवास नैं नों फल मांणौं अवचलकूट महा सु
षवास सुक्ति गये जहां सुमति जिनेश कूट भावधर
धैं कोई एक कोड प्रोषद फल होई मोहनकूट मनो
हर जांनौ पद्मप्रभु जहां तैं निर्वान कूट पुण्यफल
लहें सुजान कोड़ि उपवास केह भगवांन मनमोहन
शुभ कूट प्रभास मुक्ति गये जहां तैं श्री पार्श्व पूजे कूट

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हीपंकजेसिवपुरथांणा॥ ॐ ह्रीं॥ बीसकूटसहितओरअ
संतेमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यो॥ अर्घं॥ २२॥ टारकानि
कको॥ थांणोआदेसुरमहांराजजीश्रीअष्टापदशिवथा
णहैं॥ बांसपूज्यजिनराजजीचंपापुरसिवपदठांणाहैं
थांणीनेमप्रभुगिरनारथैंपावापुरश्रीमहांवीरस्वा
मांणीपूजौंअर्घचढायकैंसहैनासैंभवभयभीनहैंजां
थांणीपूजौंमनवचकायकैं॥ ॐ ह्रीं॥ रिषभदेवकैला
सतैंश्रीमहावीरपावापुरीतैंश्रीवासपूज्यचंपापुरतैं
श्रीनेमनाथगिरनारथैंसिद्धक्षेत्रेभ्यो॥ अर्घं॥ २३॥ दोहा
सिद्धक्षेत्रजेओरहैंभरतक्षेत्रकेमांहि॥ ओरअतसयक्षेत्र
हैंकहेजिनागममांहि॥ जिनकौंनामजोलेतहीपापदूरहो
यजाय॥ तेसबपूजौंअर्घलेभवभवकौंसुखदाय॥
ॐ ह्रीं॥ भरतक्षेत्रेअतसयक्षेत्रेभ्यो॥ अर्घं॥ सोरठा॥
द्वीपअढाईमेर॥ सिद्धक्षेत्रजेओरहैं॥ पूजौंअर्घचढाय
भवभवकेअघनासहै॥ ॐ ह्रीं॥ अढाईद्वीपसंबंधी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमा. कोडउपवासदसफलहोई॥ परमविशालकूटसुभकहौं॥ श्री
३२ नमभूजहांतैं सिवलह्यौ॥ कूटननोंदरसनहैसोय॥ एककौ
टिप्रोषधफलहोय॥ परमज्ञानधरहैसुभकूट॥ सिनपुर
कुंथगएअघछूट॥ इनकौंपूजैंदुयकरजोर॥ फलउपवा
सकहौंएककोड॥ नाटककूटमहासुभजांनौं॥ जहांतेंअ
रहमोक्षभगवांन॥ दरसनकौंकूटकोजोय॥ छ्यांनवैको
डउपवासफलहोय॥ संवलकूटमल्लजिनराय॥ जहांतेंमो
क्षगएनिजकाज॥ कूटदरसफलकहौंजिनेस॥ कोडएकप्रो
षधफलवेस॥ निर्जरकूटमहासुषदाय॥ मुनिसोब्रतजहां
तैंशिवजाई॥ कूटमित्रधरतैंनमिमोक्ष॥ पूजनआयसुरा
सुरलक्ष॥ कूटननोंफलहैसुषरासी॥ कोडउपवासकहौंजि
नरासी॥ श्रीप्रभुपारसनाथजिनराय॥ उगनीतैंछूटेमहा
राज॥ सुवरणभद्रकूटकौंनाम॥ जहांतैंमोक्षगएनिजधा
मनीनलोकहितकारनअनूप॥ मंगलमयजगमेंचिद्रूप॥
कूटननोंदरसनहैसोय॥ एककोडप्रोषधफलहोय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महांफलहोय॥ कोटउपवांसतनौंसफलहोई॥ चंदःप्रभु
जीमुक्तसोधांम॥ परमविशाललललितघटनांम॥ दरस
णकूटतनौंइमजांणौं॥ प्रोषदसोल्लालाषवषांणौं॥
सुप्रभुकूटमहांसुषदाई॥ जहांतैपुष्पदंतशिवजा
ई॥ पूजैकूटमहांफलहोई॥ कोटउपवासकह्यौंजिणरा
ई॥ सोविद्युनवरकूटमहांण॥ मोक्षगयेसीतलध
रिध्याण॥ पूजैचविधजोगकरजोई॥ कोटउपवास
तनौंफलहोई॥ संकुलकूटमहांशुभजांणौं॥ जहां
तैंश्रीआंसनाथभगवांण॥ कूटतनौंअवंदरसनसु
नौं॥ कोटउपवांसमिलैसुरभनौं॥ संकुलकूटपरमसु
षदाई॥ विमलजिणौंदजहांसिवपाई॥ मनवचदरसन
करैजोकोय॥ कोटउपवांसतनौंफलहोई॥ कूटस्वयंप्रभु
सुभगसुहाय॥ गयेअणंतअमरपुरधांम॥ येहीकूटकौंदरस
नकरैं॥ कोटउपवांसतनौंफलधरैं॥ हैसुदत्तवरकूटमहा
न॥ जहांतैंधर्मनाथनिर्वांण॥ परमविशालकूटहैसोई

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ननावननभाल गावननावननानारंग लेनजहांशुभऊ
नंदसंग निजमानिस्वरजहांवंदैआय नानाविधमंगल
कोगाय आनंदधुनसुनिमोदहोय पापनअघकौअं प
निहीहोय तातेंहमभैकांसुषदैसोय गिरवरवंदनकरध
रथभहोय भाकनमंदसुगंधचलेय गंदहोदिकनहांवर
षेसोय जियकोज्ञानविरोधनहोय गिरवरवंदकरेंधर
दोय ज्ञानचारित्रनपसाधनहोय निजअनभौकोध्या
नधरेय सिवमंदिरकांधावैंसोय गिरवरवंदकरेंधारे
य जोभवपदैंकरैरफनोवार नरकनिगोदपशुगनिदार
सुरशिवपदकोंपावैंसोय गिरवरवंदकरेंधरहीय ना
कोमहिमाअगमअपार गनधरअकथनपावैंसार सु
मअडनमैंमनरकरहीन ऊहीभक्तसुकेवललोक
श्रीसिद्धक्षेत्रअनुपधैनसेवतनासैंविघनहै
रेअरकर्मविनासेंसुषपावेंकेवलभासेंसुष्यकरै
मिश्रमृत्ये ॥ऽ॥ जैमहामनवचननकरधारसु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ ले:पं: ॥
॥ ३१ ॥

नामनसुरवृक्षसमांन ॥ रिद्धिसिद्धिमंगलसुषदाय ॥ पारस
करकांमजोधेन ॥ नानाविधआनंदकोंदेन ॥ आधिविका
रहांसवभोग ॥ मनचिंतेपूरैसवकांम ॥ भवदधिरोगविना
सकहोय ॥ जोपदजगमैंऔरनकोय ॥ निर्मलपरमधाम
उत्कृष्ट ॥ वंदनपापभजैंअरदुष्ट ॥ जोनरध्यावतगुणकर्म
प ॥ अशागावतहरकर्मनताप ॥ कटैअनादकर्मकेपाप भजैं
सकलक्षिणमैंसंताप ॥ सुरनरइंद्रफणिंद्रजोसवैं ॥ औरव
गेंद्रमहेंद्रजोनमैं ॥ जिनस्वरस्वरीकौंरेउश्चार ॥ नाचतगाव
तविविधिप्रकार ॥ धरविषभक्तकरैमनलाय ॥ विधि
प्रकारवादित्रवजाय ॥ द्रुमद्रुमद्रुमद्रुमवजैम्रदंग ॥ घन
घनघंटवजैमुहचंग ॥ झनझनझनिझांझकरैझंकार ॥ सरसा
रंगीधुणिउश्चार ॥ मुरलीवीनवजैंधुणिमिष्ट ॥ पटहांतुरीस्व
नाचतइष्ट ॥ जिनसुरगणगुणिगावतसार ॥ सुरगणनाचत
वहुतप्रकार ॥ सुननननसुननननसुननननन नूपुरधांणि ॥ नननननन
ननतोरननतांण ॥ ताथेईथेईथेईथेईवाल ॥ सुरनाचतनि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न॰पं॰॥
पै॥

नथनन नमम नभोरे। मेरे मनकुं जिने सुर भोरे॥ प
रमा सुदि वैसाष सो नप धरे। भीन सुकल मध्यान्हे ए
उपारे॥ पौ वै सुदि वै साष मांसको। नादिन शिव त्रिय के
ठलगारे॥ मेरे मन॥ दोहा॥ ४१ थ सहस्र पंचास वें
आयु धनुष पेंनीस अजानि कुलषचरन नैमनाथ नम सु
रनरईश॥ ॐ ह्रीं॥ कुंथनाथ जिन पंचकल्यानिक
भ्यो अर्घ॥ १७ भूप सुदरसनके सुतन मित्रा देवी मा
य हस्तनागपुर जनम सुदहि कुरुवंशी उ क्याय॥ पुन
म॰नेला छंद॥ नजिन पं नि लो भिमांन फागुन सुदि नी
जगरभधर॥ मारग सुदि चउदस जो मेल तो हमी जनमसो
हरकर॥ पुलमारग सुदि दसौं धरो नपनादिन भाई॥ का
तिक सुदि द्वादसी दिवसे केवल निधु पाई॥ चैत्र वदी
मावस अघातिया कर्म हरकर॥ सिद्ध देव पद पाय भ
जुधि वरताल हे वर॥ दोहा॥ परम सहस लषौ वीस की
आयु कही परवारा॥ तीस धनुष उन्नत सुतन चीन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्वारथसिद्धत्यागकैं आये गर्भमझार ॥ भादौं वदि
सातैं दिना पुरजन कियो जयकार ॥ श्री जिन पूजौं भाव सौं
जेठ वदी नेरस दिना जन्मे त्रिभुवननाथ ॥ हरि सुरगि
र लैजाइकैं कीनौं न्होन सनाथ ॥ जेठवदी चउदसि
दिना प्रभु दिख्या धारी ॥ पौष वदी नेरस दिना ग्या
न भयो हितकारी ॥ श्री जिन पूजौं भाव सौं ॥ दिख्या
दिन सिवपुर गए भए देव निरंजन ॥ अमल अरूपी
हो रहे भवि भय भंजन ॥ श्री जिन पूजौं भाव सैं ॥ देह
एक लाख वर्ष तन लिषौ धनुष मान नव चालीस ॥ मृग
चिह्न लखन नैं पूजन सुरनर ईस ॥ ॐ ह्रीं ॥ श्री शांति
जिन पंचकल्यानिकेभ्यो ॥ अर्घ ॥ १६ ॥ सूरनाम नृप
ता नंदन सुमाता श्रीकांता ॥ हथनागपुर मैं भये
कुरवंशी परवांन्या ॥ रागभैरो ॥ मेरे मन कुं
जिनेसुर भावै ॥ एकादशी वैसाख वदी कौं गरभ मां
झ प्रभु आये ॥ पुनि एकादशी वैसाख वदी कौं जनम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

…लीं एकपदलौं हे कहने हासजवार   अबवैशाखसुदी
नवमी सुभजानियै सुक्रवारकै दिनासमापतिजानिये स
कसुरवकै अंककएककरिकैरलिखौं रहषमपुरमांहिअवाहा
लालजी सुक्तागिरकोचलेहर्षधरधारजी वंदनकरकैफिर
आयेअमरावती नामनैकैह्यरहैमासदोतीन देषौसिखरवि
शालकसुमनैमैंधरी तीकेअवअनुसारसिषरपूजाकरी
सुनियोबुधजनविनतीबालकमैमती शुद्धअशुद्धजो
होयसमुदलीजोसही लीजोंचतुरसुधारसुबुधजनभाव
सों मोहदोषमनेरबकीजैशुद्ध सोमनमाहिमैनवि
वकैमैमतरहीनहा पण्डितजनचतुरसुजांणतुम्हैं
…रवीनहीं   अमरावती नगरीविषैपूजा
समापतिकीनछिमासोमदमोपैकियोसोयदोस
…नदीन १
…वेनीचैत्रसुदी   संवत् १९८४ सागर
…हस्ताक्षरमोतीलालचौधरीसागरगोपालगंजके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varhi Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi